

اپریل ۲۰۱۷ء

ماہنامہ

شعاعِ سل

لکھنؤ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى 'قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ'
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسیہ غفران مااب، چوک، لکھنؤ-۳



R.N.I NO. UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/-

April 2017

Per Copy- Rs.25/-

شुआ-ع-امل

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



قبلہ و کعبہ عالم سید العلماء آیۃ اللہ العظمی
سید حسین علیہین مکان

ولادت ۱۳ ربیع الثانی ۱۲۱۱ھ مطابق اکتوبر ۱۷۹۶ء وفات شب شنبہ ۱۷ صفر ۱۲۷۳ھ مطابق اکتوبر ۱۸۵۶ء

Lucknow



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufraan Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 25/-
Annual 200/-

बिस्मिल्ली तशाला

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल 2017 ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत मौलाना सै. कल्बे जवाद नकवी साहब

अकाल
प्रचार प्रसार

माननीय नवाब रज़ा साहब, भोपाल

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नकवी ‘असीफ़’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तज़हीब’ नगरौरी
आसिफ़ अब्बास नौगांवी, इमरान आगा

सलाहकार समिति

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन ज़फ़र नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- सै० अहमद अब्बास नकवी, मुम्बई
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ तकी नकवी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कल्बे जवाद नकवी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नकवी

अप्रैल - 2017

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नकवी
- ⇒ अमील शम्सी
- ⇒ वासिफ अहमद नकवी 'समीर'
- ⇒ शाहिद अली आजमी
- ⇒ जुलफेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्जा हुमायूँ कदर
- ⇒ डॉ० आरिफ अब्बास
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नकवी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼
Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

●●●
WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

अप्रैल 2017^{ई०}

जमादिउस्सानी 1438^{हि०}

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	शहीदे इन्सानियत (किस्त-2) आयतुल्लाहिल उज़मा सै० अली नक़ी नक़वी	5
2.	हकीक़ते दीन (किस्त-10) मुफ़क़िरे इस्लाम डॉ० मौलाना सै० कल्बे सादिक़ नक़वी	12
3.	मुख्य समाचार इदारा	15

मासिक

“शुआ-ए-अमल”

(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”

दैनिक नक़ीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

शहीदे इन्सानियत

आयतुल्लाहिल उजमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नक्वी ताबा सराह

पहला बाब

नसबी खुसूसियात, खानदान और उसके शानदार रिवायात।

निजामे अखलाक की तश्कील में आबाओ अजदाद (बाप दादा) का बड़ा हिस्सा होता है। “तवारुसे सिफात” (अच्छाईयों की मीरास) और खानदानी एहसासात के लिहाज से भी और इसलिये भी कि बचपन से कान में पड़े हुए माज़ी (पास्ट) के तज़क़ेरों से क़वा-ए-इदराक (दिलो दिमाग़) की इस तरह परवरिश होती है जिस तरह दूध से बच्चे की जिस्मानी परवरिश और जिस तरह दूध खून की शकल में तब्दील हो कर रगों में दौड़ता है यूँ ही बचपन के सुने हुए तज़क़ेरे बिजली की रौ के साथ इन्सान के दिल व दिमाग़ की गहराईयों में उतरते और नफ़्स के तहतुश शुऊरी तब्क़ों में रासिख (नफ़्स की गहराईयों में उतर जाते हैं) हो जाते हैं। इसलिये मज़हबी मोतक़ेदात (अक़ीदों) से क़तए नज़र (हटकर) करते हुए इन्सानी हैसियत से हुसैन^{अ०स०} को समझने के लिये उनके आबाओ अजदाद (खानदान वालों) के कारनामों पर नज़र डालना ज़रूरी है। हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह की ज़ात बड़ी हद तक बैनुल अक़वामी (इन्टरनेशनल) हैसियत रखती है। यानी यहूद व नसारा और मुसलमान सब उनको मानते हैं और वह मज़हबी तौर पर मुसलमानों के मूरिसे आला (वारिस, पूर्वज) कहे जा सकते हैं क्योंकि कुरआने करीम की तसरीह (साफ़ तौर पर) के मुताबिक़ हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} ने अपने को मिल्लते इब्राहीम का रहबर बताया और हज़रत इब्राहीम^{अ०स०} ही ने इस जमाअत का जो राहे हक़ में उनके पीछे आई सबसे पहले नाम “मुस्लिम” रखा और इब्राहीम^{अ०स०} की ज़बानी अपने परवरदिगार की बारगाह में यह

दुआ भी मज़कूर (लिखा) है कि खुदा वन्दा हमको “मुस्लिम” क़रार दे और हमारी औलाद में से भी एक “उम्मते मुसलेमा” क़रार दे। इस तरह मुसलमानों की कौमी ज़िन्दगी और पैग़म्बरे इस्लाम की बेसत (रिसालत का एलान) गोया दुआ-ए-इब्राहीम का नतीजा थी। इसलिये हज़रत इब्राहीम^{अ०स०} के रवायाते ज़िन्दगी अबनाए इस्लाम (आने वाली नसलों) के लिए एक मौरूसी तर्का (खानदानी विरासत में) की हैसियत रखते हैं और फ़रज़न्दाने इस्लाम के अनासिरे अख़लाक की तश्कील में उनका बड़ा हिस्सा है।

हज़रत इब्राहीम^{अ०स०} के दो बेटे थे। इस्हाक़^{अ०स०} और इस्माईल^{अ०स०}। हज़रत इस्हाक़^{अ०स०} सिलसिल-ए बनी इस्राईल के और हज़रत इस्माईल^{अ०स०} पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} के मूरिसे आला (जद) हैं। बाज़ मसालेह (मसलहतों) की बिना पर हज़रत इब्राहीम^{अ०स०} ने अपने फ़रज़न्द इस्माईल^{अ०स०} को शीरख़वारगी (कमसिनी) के आलम में आपकी वालिद-ए-गिरामी हाजेरा के साथ मक्के की सर ज़मीन पर पहुँचा दिया जिस पर ख़ान-ए-काबा वाक़े है। ख़ान-ए-काबा की तामीर का काम उन्हीं बाप बेटे इब्राहीम^{अ०स०} और इस्माईल^{अ०स०} ने अन्जाम दिया जो मज़हबी तौर पर तमाम ख़ल्क़े खुदा (लोगों) का महल्ले इज्तेमाअ (जमा होने की जगह) क़रार पाया और यह आले इब्राहीम^{अ०स०} की मरकज़ियत का एहसास आम्म-ए-ख़लाएक़ (अवाम) के दिल में पैदा होने का एक बड़ा ज़रिया बन गया।

इन दोनो बुजुर्गवारों की निसबत इस्लामी तारीख़ का यह वाक़ेया बड़ी अहमियत रखता है कि हज़रत इब्राहीम मिन जानिब अल्लाह मामूर हुए (अल्लाह की तरफ़ से चुने गए) कि अपने फ़रज़न्द

हज़रत इस्माईल^{अ०स०} को अपने हाथ से ज़िबह करें और आपने बड़ी साबित कदमी और पुर जिगरी के साथ हुक्मे रब्बानी की तकमील को अमल के आखिरी दर्जे तक पहुंचा दिया।

अगरचे वक़्त पर परवरदिगारे आलम की तरफ़ से बजाये इन्सान के जानवर की कुर्बानी के अमल में आने का इन्तेज़ाम हो गया मगर इस एलान के साथ कि आइन्दा इस का मुआवज़ा राहे खुदा में एक बड़ी कुर्बानी के साथ होना ज़रूरी है। **व फ़दैनाहो बे जिब्हिन अज़ीम⁽¹⁾** इस वाक्ये को इस्लाम ने बड़ी अहमियत दी और ईदे कुर्बान की शक़ल में इसकी मुस्तक़िल यादगार कायम कर दी।

इस्माईल^{अ०स०} के बारह फ़रज़न्द थे। उन में से नाबत और कीदार की औलाद हिजाज़ (आजका सऊदी) में आबाद हुई और बहुत फैली। कीदार की औलाद में अदनान बहुत मशहूर हैं और पैग़म्बरे इस्लाम^{स०अ०} उन्हीं की औलाद में से थे।²

हज़रत का नसब नामा आपकी ज़ात से लेकर अदनान तक मुत्तफ़ेका तौर से (शिया, सुन्नी के यहाँ एक साथ) तवारीख़ (History) व सीरत में मौजूद है। इस तरह (1) अदनान (2) मअद (3) निज़ार (4) मुज़र (5) इल्यास (6) मुदरका (7) खुज़ैमा (8) कनाना (9) नज़र (10) मालिक (11) फ़हर (12) ग़ालिब (13) लुई (14) काअब (15) मुर्रा (16) किलाब (17) कुसैय (18) अब्दे मनाफ़ (19) हाशिम (20) अब्दुल मुत्तलिब (21) अब्दुल्लाह जो हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} के वालिदे बुजुर्गवार थे।³ इससे मालूम होता है कि हज़रत से अदनान तक इक्कीस पुश्तें हैं और अगर हर नस्ल का औसत तीस साल क़रार दिया जाये तो कुल पुश्तों की मुद्दत 630 बरस हुई। कुरैश का लक़ब उन इक्कीस आदमियों में से किसको मिला। इसमें इख़्तेलाफ़ है। बाज़ कहते हैं कि कुरैश का

¹(सूरए साफ़ात आयत 107)

²अल-उमम वल-मुलूक तबरी/2, पेज/191-192

³सीरते इब्ने हिशाम जि/1 त/मिस्र पेज/2, तबक़ाते इब्ने सअद त/लीदन जि/1, पेज/27-28

लक़ब सबसे पहले नज़र बिन कनाना को मिला। बाज़ के नज़दीक़ फ़हर को और बाज़ के नज़दीक़ कुसैय बिन कलाब को। वजहे तस्मिया (नाम रखने की वजह) में भी कई कौल हैं। उनमें से एक यह है कि वह तकररुश से माखुज़ (लिया गया) है, तिज़ारत और कस्बे मआश (रोज़ी कमाना) के माना में, चूँकि यह लोग अपनी मेहनत व मशक्क़त और कुव्वते बाजू की कमाई को मेयारे इज़्ज़त समझते थे और अमली तौर पर उस के पाबन्द थे इसलिये कुरैश कहलाये और एक कौल यह है कि वह तकररुश ब-माना इज्तेमा से माखुज़ (लिया गया) है। चूँकि उन लोगों ने मुतफ़रिफ़ (अलग-अलग) होने के बाद इज्तेमाई शक़ल इख़्तियार की इसलिये कुरैश कहे जाने लगे।⁴

चूँकि कुसैय के वक़्त तक नस्ले अदनान के लोग मक्के के पहाड़ों और वादियों में मुन्तशिर थे, कुसैय ने इन सबको जमा करके काबे के आस पास मकानों में आबाद किया इसी लिये खुद कुसैय को मुजम्मैअ (जमा करने वाले) के लक़ब से याद किया जाने लगा जैसा कि अरब के शायर ने कहा है:

**अबू कम कसा कान यदआ मुजम्मैअन
बह जमउल्लाहिल कबाएल मिन फहर**

(यानी) तुम्हारे मूरिसे आला कुसैय वह हैं कि जो “मुजम्मैअ” कहलाते थे। उन्हीं के ज़रिये से अल्लाह ने कबील-ए-फ़हर की मुख़्तलिफ़ शाख़ों को एक जगह जमा किया।⁵

नाबत बिन इस्माईल^{अ०स०} के बाद खान-ए-काबा की तौलियत (मुतवल्ली) ज़ुरहमी खानदान की तरफ़ जो उनके ननिहाल वाले थे मुन्तक़िल हो गई थी और इस तरह यह लोग दुनियवी और मज़हबी इक्तेदार दोनों के मालिक बने हुए थे। अरसे तक काबिज़ रहने के बाद उन्होंने काबा के अमवाल (पैसों) में तग़ल्लुब (इख़्तियार) व तसररुफ़ और हज को आने वाले

⁴सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/60-61

⁵तबरी जि/2, पेज/182

परदेसियों पर जुल्मो सितम और हरमे मक्का की हुरमतों को बर्बाद करना शुरू कर दिया जिसके नतीजे में बनी खुजाआ ने यमन से निकल कर उन पर हमला कर दिया और उन्हें मक्के से निकाल कर खुद काबिज हो गए। यह खानदान तकरीबन दो सौ साल तक काबे का मालिक बना रहा। कुसैय ने उन्हीं में शादी की और जब उनका असरो रसूख (दबदबा) हिजाज़ में बढ़ गया तो उन्होंने नज़र बिन कनाना की तमाम औलाद को जमा करके उन्हें खान-ए-काबा की हिमायत और तौलियत की ज़िम्मेदारी याद दिलाई और आखिर मुत्तफ़ेका ताक़त (एकता) के साथ खुजाईयों को शिकस्त दे कर मक्के पर खुद काबिज हुए। उन्होंने मक्क-ए मुअज़्जेमा के मकानात की अज़ सरे नौ (नए सिरे से) तामीर की और दारुन नदवा (मशवरे की जगह) के नाम से एक इमारत तय्यार कराई जिसमें जमहूर (अवाम) के काम अन्जाम दिये जाते थे। उनके लिये मआशिरत के क़वानीन मुनज़बित किये (आपसी लेनदेन के क़ानून नाफ़िज़ किए) और ख़िराज की वसूलयाबी और हाजियों के खुर्दो नोश (खाने पीने) का भी इन्तेज़ाम कराया।⁶ उन्होंने शराब ख़ोरी की मज़म्मत और उसकी मुज़िरतों (नुक्सान) का एलान भी किया।⁷

कुसैय के फ़रज़न्द में अब्दे मनाफ़ औसाफ़ (अच्छे गुणों) व कमालात में अपने बुजुर्गों के हकीकी जानशीन थे इसलिये अपने बाप की ज़िन्दगी ही में उन्होंने मुल्के अरब में शोहरत व इम्तेयाज़ का दर्जा हासिल कर लिया।⁸

अब्दे मनाफ़ के फ़रज़न्दों में हाशिम जिनका अस्ल नाम अम्र था निहायत बाअसर और मुमताज़ थे। काबे की मुअज़्ज़ि (मोहतरम) ख़िदमतें हाजियों की सैराबी और ज़ियाफ़त (मेहमान दारी) उनको सिपुर्द की गई जो उन्होंने बहुत काबलियत से अन्जाम दीं। उन्होंने सलतनते रोम से ख़तो किताबत करके कुछ ख़ास हुकूक अरब तज्ज़ार

(ताजिर) के वास्ते हासिल किये थे।⁹ “हाशिम” उनका लक़ब इस वजह से हुआ कि उन्होंने सबसे पहले अहले मक्का को रोटियों के टुकड़े शोरबे में भिगो कर खिलाये।¹⁰ (अरबी में हशम चूरा करने को कहते हैं) हाशिम की वफ़ात के बाद उनके भाई मुत्तलिब जानशीन हुए। इसलिये कि हाशिम के फ़रज़न्द शैबा उस वक़्त निहायत कमसिन थे। जब मुत्तलिब की वफ़ात हुई तो उनकी जगह उनके भतीजे शैबा ने हासिल की जो अब्दुल मुत्तलिब के नाम से मशहूर हुए। यह शरफ़, अज़मत और शोहरत में अपने बुजुर्गों पर भी फ़ौकियत ले गए।¹¹ और “सय्यदुल बतहा” के ख़िताब से मशहूर हुए जो उनकी औलाद में बाकी रह गया। चुनानचे वह आज तक “सादात” कहे जाते हैं। अब्दुल मुत्तलिब का तवक्कुल (भरोसा) और एतेमाद खुदा पर उस वक़्त पूरे तौर पर ज़ाहिर हुआ जब अबरहा ने यमन से बढ़कर काबे को ढाने के इरादे से मक्के पर चढ़ाई की। मक्के वालों के पास कोई ऐसी फ़ौजी ताक़त न थी जिससे वह ग़नीम का मुकाबला करते मगर अब्दुल मुत्तलिब खुदा वन्दे इमदाद पर भरोसा रखते थे। आखिर ग़ैबी ताक़त ही ने असहाबे फ़ील (हाथियों वाले लश्कर) को तबाह कर दिया।¹² अब्दुल मुत्तलिब के दस बेटों में से दो बेटे अब्दुल्लाह और अबू तालिब थे। अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब की कुर्बानी का वाक़ेया भी कुतुबे तवाशीख़ में मज़कूर (बयान) है और मशहूर है कि अब्दुल मुत्तलिब अपने फ़रज़न्द अब्दुल्लाह की कुर्बानी पर तय्यार थे मगर उनके ननिहाल वालों के इसरार पर कुरआ डाला गया और सौ ऊँटों की कुर्बानी के बदले में अब्दुल्लाह की जान बची।¹³ चूँकि अब्दुल्लाह का इन्तेक़ाल बाप के सामने हो गया। इसलिये अब्दुल मुत्तलिब के तमाम

⁹तबरी जि/1, पेज/190, जि/2, पेज/180

¹⁰सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/185, तबरी जि/2, पेज/179

¹¹सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/86

¹²(उसूले काफ़ी तबा लखनऊ पेज/283, सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/32.34, तबरी जि/2, पेज/172.174)

¹³सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/94.97

इस्तेयाज़ात (खुसूसियसात) व इख्तियारात अबु तालिब को हासिल हुए। “शैखुल बतहा” और सय्यदुल कुरैश” के खिताबों से मशहूर हुए। और उन अमानतों के साथ साथ जो इब्राहीम व इस्माईल^{अ०स०} की मतरूका (छोड़ी) थीं एक सबसे बड़ी अमानत जो उनकी हिफाज़त में आई वह अब्दुल्लाह के यतीम फ़रज़न्द मोहम्मद की ज़ात थी।

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} की उम्र नौजवानी की मन्ज़िल में थी कि आपकी रास्तबाज़ी (सच्चाई) और अमानत दारी को तमाम अरब ने तस्लीम करते हुए आपको “अमीन” का लक़ब दे दिया।¹⁴ अपनी अमानतें आपके पास रखवाना शुरू कर दीं। अहम मुआमेलात (लेन देन) में आपके तसफ़िये (फ़ैसले) को काबिले कुबूल समझने लगे। जब आपकी उम्र बीस साल की थी तो कुरैश में “हलफुल फुजूल” (एक दूसरे के जानो माल की सलामती का मीटिंग में फ़ैसला) का अहद नामा हुआ।¹⁵ जो बेनज़ीर शरीफ़ाना उसूल पर मबनी था और उसकी तहरीक का सेहरा बनी हाशिम ही के सर रहा, इसलिये कि जुबैर बिन अब्दुल मुत्तलिब उसके दाई (बानी) थे।

वाक़ेया यह था कि अब्दुल मुत्तलिब के इन्तेक़ाल के बाद अरब में मुतलकुल अनानी और बेआईनी (मनमानी और बग़ैर तरीक़े) का दौर दौरा हो गया, रिश्तेदारियों के लिहाज़ से आपस में किशतो खून (खून ख़राबा) तो नहीं होने पाया मगर अजनबी लोगों के साथ इन्साफ़ नहीं होता था। चुनानचे कबील—ए—जुबैर के एक यमनी शख्स ने जिससे कि आस बिन वायल सहमी ने कोई बीश कीमत चीज़ ख़रीद कर कीमत अदा नहीं की थी तमाम आले फ़हर को मुख़ातिब करके मुअस्सिर अन्दाज़ में इस जुल्मो सितम का शिकवा भी किया।

उन्हीं वाक़ेयात से मुतअस्सिर हो कर बनी हाशिम, ज़ोहरा और असद बिन अब्दुल उज़ा के कबीले

अब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान में जमा हुए और मुत्तफ़ेका तौर पर अहद किया कि हम हमेशा मज़लूम का साथ देंगे और उस वक़्त तक चैन नहीं लेंगे जब तक उसका हक़ अदा न हो जाये। इस मुआहदे का नाम “हलफुल फुजूल” (क़सम) रखा गया जिसमें फ़ज़ल, फ़ज़्ज़ाल, मुफ़ज़िल और फुज़ैल शामिल थे और इसलिये उसका नाम फुजूल करार पागया था। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} इस मुआहदे में शरीक थे और हमेशा इस पर नाज़ाँ रहे बल्कि बेअसत के बाद जबकि अरब के तमाम क़दीम मुआहदात (एग्रीमेन्ट) और मुख़सिमात (दुश्मनियाँ) कल अदम (मन्सूख़) करार दे लिये गए थे आप अपने को इस मुआहदे का पाबन्द समझते थे और फ़रमाते थे कि आज भी अगर कोई मुझे इस मुआहदे की बिना पर आवाज़ दे तो मैं उसकी सदा पर लब्बैक कहूँगा।¹⁶ अगर आपने अरब की तारीख़ पढ़ी है तो आपको मालूम होगा कि यह मुआहेदा इस क़ौम की आम ज़हनियत के बिल्कुल ख़िलाफ़ था। वहाँ तो यह था कि हमको अपने कबीले वाले की मदद करना चाहिए ख़्वाह वह ज़ालिम हो या मज़लूम। इस क़बायली तअस्सुब का नतीजा यह था कि एक शख्स की ज़ाती जंग क़बायली जंग बन जाती थी जो चालीस चालीस बरस जारी रहती थी। इस ग़लत ज़हनियत की सबसे पहले मुख़ालिफ़त करने वाले बनी हाशिम थे जो दुनिया को हक़ व इन्साफ़ की क़द्रो कीमत का अन्दाज़ा करा रहे थे और बता रहे थे कि इसके मुक़ाबले में क़ौमियत या बरादरी कोई चीज़ नहीं है।

जब हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} की उम्र तीस बरस की थी अबू तालिब के यहाँ अली^{अ०स०} की विलादत हुई।¹⁷ और अभी अली बिन अबी तालिब चन्द ही साल के थे कि मक्के में क़हत (सूखा) पड़ा और अबू तालिब एक्तेसादी (माली) तकालीफ़ में मुबतिला हो गए। आपके बार को कम करने के लिए मोहम्मदे मुस्तफ़ा^{स०अ०} ने अली की परवरिश

¹⁴इब्ने हिशाम जि/1, पेज/84, इब्ने सअद जि/1, पेज/82

¹⁷आप मक्के—ए—मुअज़्ज़ेमा के अन्दर 13 रजब सन 30 आमुल फ़ील को (काबा पर हाथियों के हमले से तीस बरस के बाद पैदा हुए)

मुव्वेजुज़ ज़हब मसऊदी, मुस्तदरक़ हाकिम, इरशाद शैख़ मुफ़ीद

¹⁴तबक़ात इब्ने सअद जि/1, पेज/76

¹⁵इब्ने सअद जि/1, पेज/82

खुद से मुतअल्लिक कर ली इस तरह अली, मोहम्मद के आगोशे तरबियत में आ गए।¹⁸ यहाँ एक मर्तबा इस पर नज़र डाल लिजिये कि इस खानदान की ज़मीने शरफ़ किस आसमान तक पहुँच चुकी थी और उसके क़दीम रिवायात किस दर्जा शानदार हैं।

1. काबा जो तमाम अरब के मज़हबी इज्तेमा का मरकज़ है वह तामीर किया हुआ है उनके मूरिसे आला हज़रत इब्राहीम^{अ०स०} का।

2. उनके दादा हज़रत इस्माईल^{अ०स०} अल्लाह की बारगाह में अपनी जान का नज़राना पेश करके “ज़बीहुल्लाह” (ज़िबहे खुदा) कहलाये।

फिर अब्दुल मुत्तलिब और उनके फ़रज़न्द अब्दुल्लाह ने इसी सबक को दोहरा कर साबित कर दिया कि यह कुर्बानी का ज़ब्बा इस खानदान का विरसा है जो दुनिया को बराबर याद रहा। चुनौतियों के इन दोनों तय शुदा कुर्बानियों की बिना पर हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} को “इब्नुज ज़बीहैन” (दो ज़बीहों के बेटे) के लक़ब से याद किया गया।¹⁹

3. तमाम क़बायल मुज़िर की शीराज़ा बन्दी का फ़ख़्र उन ही को हासिल है।

4. ख़ान-ए-काबा के मुहाफ़िज़ और मौसमे हज के मुन्तज़िम होने की हैसियत से उन्हें तमाम अरब की मरकज़ियत हासिल है।

5. तमाम अन्दरूनी और बैरूनी मुआमिलात में अरब कौम की क़यादत और नुमाइन्दगी उनका हिस्सा है।

6. वह ग़रीबों के दस्तगीर और कहत साली (सूखा पड़ने) वग़ैरह के सख़्त अवकात (वक़्तों) में मिसकीनों की ख़बरग़ीरी करने वाले हैं।

¹⁸इब्ने हिशाम जि/1, पेज/156

¹⁹तबरी जि/1, पेज/135, शरीयते इस्लामिया में यह तरीक़-ए-कुर्बानी कि अपने हाथ से अल्लाह की रिज़ा के लिये अपना या किसी अपने से मुतअल्लिक इन्सान का खून बहाया जाये मन्सूख़ (रद) कर दिया गया मगर राहे खुदा में जब ज़रूरत हो तो दुश्मनों से ज़ेहाद करके अपनी जान कुर्बान करने का उसूल कायम रहा और आले रसूल^{स०अ०} ने अमली तौर पर इसी की मिसालें पेश कीं।

7. वह इस्म (नाम) और मुसम्मा (नाम आवर) दोनों हैसियतों से सय्यद (सरदार) माने जाते हैं।

8. वह एक ही वक़्त में मैदाने जंग के शहसवार और आलमे रूहानी के राज़दार हैं जिसका गवाह अस्हाबे फ़ील के मुक़ाबले में अब्दुल मुत्तलिब का तरीक़-ए-पैकार है।

9. उन्होंने मज़लूमों की हिमायत और हक़ की तरफ़दारी का बेड़ा उठाया और इस बारे में तमाम कुरैश की रहनुमाई की थी।

यह हैं वह नुमायों ख़ुसूसियात जो तारीख़ी असनाद (सनदों) के साथ इस खानदान के लिये अभी तक साबित थे मगर अब इसी मशरिक़ से वह आफ़ताब चमकता है जिसकी शुआएँ दुनिया-ए-इन्सानियत को सुबहे क़यामत तक रौशन रखेंगी।

सातवीं सदी ईसवी के शुरू होने पर जबकि दुनिया तारीकी के अज़ीम दौर से गुज़र रही थी। जज़ीरा नुमाये अरब से यह आफ़ताब ताले (ज़ाहिर) हुआ जिसकी इब्तेदाई किरनें अगरचे हिजाज़ की सर ज़मीने मक्का से ज़ाहिर हुई थीं मगर रफ़ता रफ़ता उसकी रौशनी शर्क़ व गर्ब (Asia and Eurup) में फैल गई और दुनिया को रौशन कर दिया।

यह आलमगीर मज़हब इस्लाम था और उस खुदा वन्दी पैग़ाम के पहुंचाने के लिए मोहम्मदे मुस्तफ़ा^{स०अ०} मुन्तख़ब हुए जिनके ज़रिये से कायनात को एक खुदा-ए-तवाना के सामने सर झुकाने की तालीम दी गई और गैरुल्लाह की परस्तिश (पूजा) को मिटाने का एलान किया गया। ख़्वाह वह सोने चाँदी और पत्थर के बुत हों या गोश्त पोस्त से बना हुआ इन्सान जो उलूही इक्तेदार के सामने अपनी सितवत (शाही) व हैबत का सिक्का जमाना चाहता हो और ख़ल्क़े खुदा को अपने सामने सरनिगूँ होने पर मजबूर करे।

उस वक़्त हज़रत अली इब्ने अबी तालिब^{अ०स०} की उम्र दस बरस की थी और चूँकि अली^{अ०स०} पहले रसूल^{स०अ०} की आगोशे तरबियत में थे।²⁰

²⁰तबरी जि/2, पेज/312

इसलिये यह कहना बिल्कुल दुरुस्त है कि अली^{अ०स०} और इस्लाम में वही वाबस्तगी पैदा हुई जो एक आगोश में रहने वाले दो बच्चों में आपस में होना चाहिए।

चन्द साल तक राजदारी के साथ फ़र्ज तबलीग़ को अदा किया गया।²¹ उसके बाद हुक्म आ गया وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ (यानी अपने करीबी रिश्तेदारों को तबलीग़ कीजिये।)²² हज़रत ने इस हुक्म की तामील में दावत का इन्तेज़ाम कर दिया और तमाम औलादे अब्दुल मुत्तलिब को जमा करके अपनी रिसालत का एलान किया और तौहीदे इलाही का पैग़ाम पहुंचाया। फिर फ़रमाया कि तुम में से कौन शख्स इस दीन की इशाअत में मेरा दस्तो बाजू बनने के लिये तय्यार है? इस वादे पर कि वही मेरा भाई, मेरा वसी, और मेरा जानशीन करार पायेगा। मजमा तमाम ख़ामोश था। हज़रत अली^{अ०स०} अगरचे सबसे ज़्यादा कमसिन थे मगर आप खड़े हो गए और कहा कि मैं आपका इस मुहिम में हर तरह से मददगार रहूँगा, आप ने हज़रत अली^{अ०स०} के कांधे पर हाथ रखा और फ़रमाया बस यह मेरा भाई, मेरा वसी और मेरा जानशीन है, तुम सबको इसकी इताअत लाज़िम है।²³

अब एलानिया बुत परस्ती की मज़म्मत होने लगी जिससे कुरैश आपकी मुख़ालेफ़त पर कमर बस्ता और ईज़ा रसानी (तकलीफ़ पहुंचाना) पर आमादा हो गए मगर आपके चचा जनाबे अबू तालिब की शख़सियत आपके सामने सीना सिपर थी जिसकी वजह से उन लोगों को कुछ बन न पड़ता था। आख़िर एकाबिरे कुरैश (कुरैश की सरदारों) का एक वफ़द अबू तालिब के पास आया। उसमें अतबा, शैबा, अबू सुफ़ियान, आस बिन हिशाम, अबू जेहल, वलीद बिन मुगीरा और आस बिन वाएल वगैरह शरीक थे। उन लोगों ने अबू तालिब से कहा कि तुम्हारा भतीजा हमारे माबूदों (खुदाओं)

²¹तबक़ात इब्ने सअद जि/1, पेज/132, तबरी जि/2,

पेज/216-218, इरशाद पेज/16

²²क़ुर्आन सुरए शुआ आयत/214

²³तबरी जि/2, पेज/217

को बुरा कहता है। हमारे मज़हब की मज़म्मत करता है। हमको अहमक ठहराता है और हमारे अबाओ अजदाद (पूर्वजों) को गुमराह बताता है इसलिये या तो तुम उसे इन बातों से रोक दो या उसे हमारे सिपुर्द कर दो। पहली बार अबू तालिब ने नर्मी से उनको टाल दिया मगर कुछ अरसे के बाद जब यह वफ़द (Delegation) फिर आया तो उसने निहायत सख़्ती से कहा कि अब हम इस सूरते हाल को बर्दाश्त नहीं कर सकते। या तो तुम उन्हें रोको या हमारे तुम्हारे दरमियान जंग हो कि हम दोनों में से एक का फैसला हो जाये। अबू तालिब ने मुनासिब समझा कि अब रसूल अल्लाह^{स०अ०} से इसका तज़केरा करें। हज़रत ने पूरा वाक़ेया सुना तो फ़रमाया: “खुदा की क़सम अगर यह लोग मेरे एक हाथ में सूरज और दूसरे में चाँद लाकर दे दें तब भी मैं अपने फ़र्ज से बाज़ न आऊंगा। खुदा इस काम को पूरा करेगा या मैं खुद इस पर निसार हो जाऊँगा।” और यह कहते कहते आँखों में आँसू आ गए। यह देखना था कि अबू तालिब का दिल हिल गया। उन्होंने कहा कि “अच्छा तुम अपने फ़र्ज को अन्जाम देते रहो मैं आख़िर दम तक तुम्हारा साथ दूँगा।”²⁴

चुनौनचे अबू तालिब ने हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} की हिफ़ाज़त में कोई दकीका उठा न रखा और जब तक ज़िन्दा रहे रसूल^{स०अ०} के सीना सिपर रहे।

मगर हज़रत अबू तालिब और ख़दीज—ए कबुरा की वफ़ात के बाद अहले मक्का की ईज़ा रसानी हज़रत रसूल^{स०अ०} के ख़िलाफ़ बहुत बढ़ गई और आपने उनके राहे रास्त पर आने से ब—ज़ाहिर असबाब ना—उम्मीद हो जाने की वजह से यह तय कर लिया कि अब मक्क—ए मुज़्जेमा को जो आपका आबाई वतन था तर्क फ़रमा दें। चुनानचे रफ़ता रफ़ता अपने मुत्तबेईन (इताअत करने वाले) को मदीने की तरफ़ जहाँ के कुछ लोगों ने आपकी पैरवी कुबूल कर ली थी रवाना

²⁴सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/163-164, तबरी जि/2, पेज/219.-220

फ़रमाने लगे। यह देख कर मक्के वाले सब आपकी जान लेने के दरपै हो गए और एका हुआ कि रात के वक़्त आपके घर को घेर कर आपको क़त्ल कर डालें। आप अपने चचाज़ाद भाई अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} को यह हिदायत फ़रमा कर कि वह आपके बिस्तर पर आपकी चादर ओढ़कर सो रहें खुद मदीनेकी तरफ़ रवाना हो गए। हज़रत अली^{अ०स०} ने दुश्मनों की खिंची हुई तलवारों के अन्दर रसूल^{स०अ०} के बिस्तर पर आपकी चादर ओढ़कर आराम किया।²⁵

फिर मदीना पहुँचने के बाद जब मुख़ालेफीने इस्लाम ने फ़ौजी ताक़तों के साथ मुसलमानों पर चढ़ाई की और बद्र व ओहद और ख़न्दक़ व ग़ैरह की लड़ाईयाँ हुई तो उन लड़ाईयों में हक़ व सदाक़त की रुहानी ताक़त के साथ हज़रत अली—ए—मुरतज़ा^{अ०स०} की तलवार हर मौक़े पर इस्लाम की फ़तह मन्दी का सबब बनती रही। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा^{स०अ०} की एक बेटी थीं फ़ातिमा ज़हरा जिनकी उनके बलन्द औसाफ़ की बिना पर आप इतनी इज़ज़त करते थे कि जब वह आपके पास आती थीं तो आप ताज़ीम के लिये खड़े हो जाते थे।²⁶ और ब—कसरत हदीसें आपने उनकी फ़ज़ीलत के बारे में इरशाद कीं जिन में एक यह थी कि वह सरदार ज़ेनाने जन्नत और सरदार ज़नाने अहले ईमान हैं।²⁷ और फ़रमाया कि फ़ातेमतो बज़अतो मिन्नी यानी फ़ातिमा मेरा एक टुकड़ा है।²⁸ ज़ाहिर है कि ऐसी बेटी के लिए रसूल ऐसे ही साहिबे औसाफ़ मौजूं तरीन कुफ़ु (बराबरी) को मुन्तख़ब फ़रमा सकते थे। इसी का नतीजा था कि बहुत से पैग़ाम और निसबतें आईं मगर सब मुस्तरद कर दी गईं और सिर्फ़ अली^{अ०स०} ही की एक ज़ात जिसके लिए रसूल^{स०अ०} का कौल था कि मैं और अली एक ही नूर से हैं।²⁹ इस रिश्ते के

²⁵तबकात इब्ने सअद जि/1, पेज/153, इब्ने हिशाम जि/1, पेज/289-290, तबरी जि/1, पेज/244

²⁶इस्तीआब जि/2, पेज/272, आलामुल वरा पेज/656

²⁷सही बुख़ारी जि/2, पेज/174-185-189, सही मुस्लिम जि/2, पेज/290

²⁸बुख़ारी जि/2, पेज/185.189

²⁹फ़िरदौसुल अख़बार दैलमी व तज़केरा सिब्ते—ए—इब्ने जोज़ी वग़ैरह

लिये मौजूं समझी गई और रसूल ख़ुदा^{स०अ०} ने फ़रमाया कि यह मेरा ही नहीं बल्कि अल्लाह का इन्तेखाब है।³⁰ उन्हीं दोनों मुक़द्दस और बुजुर्ग़ मर्तबा माँ बाप से दो फ़रज़न्द पैदा हुए। एक हसन^{अ०स०} और दूसरे हुसैन^{अ०स०}। अब क्या हुसैन^{अ०स०} भुला सकते थे अपने ख़ानदानी खुसूसियात और क़दीम रवायात को? ब—कौल मौलाना डाक्टर सय्यद मुजतबा हसन साहब कामून पूरी:

“हुसैन जिस नस्ल की यादगार थे वह सदियों से कुर्बानी व फ़िदाकारी की एक मुसलसल तारीख़ तय्यार कर रही थी।” हुसैन^{अ०स०} ने देखा नहीं मगर कानों से सुनते तो रहे कि हमारे मूरिसे आला इब्राहीम^{अ०स०} ख़ुदा की रज़ा के लिए बेटे के ज़िबह पर तय्यार हो गए। हमारे परदादा अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को कुर्बानगाहे उबूदियत में पेश किया। हमारे ज़द्दे बुजुर्ग़वार हाशिम ने अपने माल व दौलत और असर को हमेशा ख़ल्फ़े ख़ुदा की ख़िदमत में सर्फ़ किया। हमारे ख़ानदान ने मज़लूमों की इमदाद और ज़ालिमों से मुकाबले का हलफ़ उठाया है इसलिये अगर ख़ल्फ़े ख़ुदा किसी ज़ालिम के हाथ से परेशान हो तो हमारा फ़र्ज़ है कि हम मज़लूमों की दस्तगीरी के लिए आगे बढ़ जायें।³¹

हुसैन^{अ०स०} को मालूम हुआ कि सच्चाई की ख़ातिर पत्थर खाये मुसीबतें उठाईं मेरे नाना रसूल^{स०अ०} ने। और पैग़म्बरे इस्लाम की हिफ़ाज़त के लिये
(बकिया पेज नं० 16 पर.....)

¹सवाएके मुहर्रका पेज/84.97

¹हलफ़ुल फ़ुज़ूल को इमाम हुसैन^{अ०स०} अपने पेशे नज़र रखते थे। इसका सुबूत यह है कि एक मौक़े पर जब वलीद बिन अतबा हाकिमे मदीना ने आपके साथ जुल्म व सितम से काम लिया तो आपने हलफ़ुल फ़ुज़ूल का हवाला दिया था और उसकी पाबन्दी की तरफ़ सबको तवज्ज़ा दिलाई थी। जिसके नतीजे में अब्दुल्लाह बिन जुबैर, मंसूर बिन मख़रमा बिन नौफ़िल ज़हरी और अब्दुर रहमान बिन उसमान बिन अब्दुल्लाह तैमी मुतअददिद अश़ा़ास (बहुत से लोग) ने यह एलान किया कि अगर हुसैन बिन अली^{अ०स०} इस मुआहदे (Agreement) की बिना पर अपने हक़ को तलब करने के लिए खड़े हों तो हम साथ होंगे। आख़िर वलीद ने सरे तस्लीम ख़म कर दिया और हज़रत के मुतालबे को मन्ज़ूर किया। सीरते इब्ने हिशाम जि/1, पेज/84

हकीकते दीन

किस्त -10

मुफ़विकरे इस्लाम डॉ० मौलाना सै० कल्बे सादिक साहब किब्ला

अल्लाह अरशे आज़म से पहले आसमान तक उतर कर आता है। आये उतर कर, बहुत अच्छी बात है। अब उसके बाद क्या कहूं कि वह आता काहे पर है? मआज़ अल्लाह गधे पर बैठ कर। कोई जानवर ही नहीं मिला सिवाये गधे के। हमारे यहाँ दूल्हा भी अगर गधा बनाया जाता है तो वह भी बेचारा घोड़े पर बिठा कर निकाला जाता है और वहाँ बेचारे अल्लाह मियां गधे पर बैठ कर तशरीफ ला रहे हैं मआज़ अल्लाह। अब ऐसे खुदा को कौन मानेगा। भय्या, मैं तो नहीं मानुंगा। आयतुल्लाह मुत्तहरी (ईरान) ने लिखा है कि ईरानियों को दो ही शौक होते हैं। एक हज करने का और एक कुरआने मजीद की तिलावत करने का शौक। आयतुल्लाह मुत्तहरी ने लिखा है कि एक ईरानी हाजी साहब जब हज करके वापस लौटे तो लोगों ने उनसे पूछा कि हज कैसा रहा। हाजी साहब ने जवाब दिया कि हज तो बहुत अच्छा रहा, बस एक बात का दाग़ दिल पर रह गया। लोगों ने पूछा क्या? हाजी साहब ने जवाब दिया कि रसूल करीम (स०) के रौजे की ज़ियारत हो गयी। सहाबाये कराम के रौजो की ज़ियारत हो गयी। अहलेबैत अतहार की मुबारक कब्रों की ज़ियारत हो गयी। ये सारी कब्रें और मज़ार तो मैंने देख लिये लेकिन अल्लाह तआला की कब्र की ज़ियारत मुझे नहीं हो सकी। इसीलिए मैं बार-बार अर्ज़ करता रहता हूं कि जेहालत को मिटाइये। जेहालत तो वह दीमक है कि जिस लकड़ी में लगी, उस लकड़ी को उसने खोखला करके खत्म कर दिया। तो अज़ीज़ों, अल्लाह को न मानने का नज़रिया कोई नया नहीं है बल्कि ये हमेशा से रहा है। नबियों के

दौर में रहा, रसूलों के दौर में रहा, आइम्मा-ए-ताहिरीन (अ०) के दौर में रहा।

“इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) का मुनाज़रा”

इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) के ज़माने में एक शख्स था जिसका नाम ‘अब्दुल्लाह’ था। बड़ा ज़बरदस्त स्कालर था, बहुत बड़ा फलसफी था। मगर खुदा को नहीं मानता था। मुल्हिद (नास्तिक) था। आलमे इस्लाम में उसने हलचल मचा दी, जिससे बहस की उसको चित कर दिया। जिससे बहस करता, साबित कर देता कि खुदा नहीं है। आखिर में इतना गुरुर (घमण्ड) पैदा हुआ कि अपने शहर से चला कि बस अब आखिरी मरहला रह गया है। मदीने जाकर इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) को भी चित कर दूं तो मामला साफ हो जाये। अब जो वो मदीने आया तो उसके आने का इतना हुल्लड़ हुआ कि मदीना उमड़ पड़ा यह देखने के लिए कि अब यह आखिरी राउन्ड (Round) है, देखिये यहां क्या होता है? इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) भी तशरीफ फरमां थे। अब मजमा इन्तेज़ार में है कि दोनों के दरमयान गुफ्तगू (Debate) हो और देखें कि नतीजा क्या है? एक तरफ ‘अब्दुल्लाह’ जा खुदा को नहीं मानता था और दूसरी तरफ नुमाइन्दे इलाही यानि इमाम जाफ़रे सादिक (अ०) मजमा नतीजे का इन्तेज़ार कर रहा है। दोनों के दरमयान सलाम जवाब हुआ। इमाम ने उसके बैठते ही पहला सवाल जो किया वो ये कि आप का नाम क्या है, वैसे ही वो उठा और चला गया। लोगों ने कहा कि कहां जा रहे हो? उस बेचारे

ने कहा मुनाजरा खत्म हो गया, मैं हार गया। एक राउन्ड भी तो नहीं हुआ और नाक आउट। लोगों ने कहा न बहस हुई न गुप्तगू हुई। इमाम ने सिर्फ नाम पूछा और तुम ने हार मान ली। ये हार कैसे हुई? अब्दुल्लाह ने कहा, ये (इमाम) तो बहुत तेज़ है भाई! जैसे ही मैं आया वैसे ही पूछते हैं कि मेरा नाम क्या है? मेरा नाम है 'अब्दुल्लाह' और इसके माने होते हैं 'अल्लाह का बन्दा'। अगर मैं इनको अपना नाम बताता तो ये पूछते कि जब अल्लाह ही नहीं है तो बन्दे किसके हैं? तो पहले जाकर अपना नाम बदलूँ फिर गुप्तगू के लिये आऊँ।

“अल्लाह की मारेफ़त के लिये रुहानी वसीलों की ज़रूरत”

आइम्मा-ए-ताहेरीन (अ०) ने फ़रमाया है कि खुदा को समझना है तो खुदा की मख्लूक (Creatures) के ज़रिये अल्लाह को समझना। खुदा की ज़ात में कभी ग़ौर न करना वरना गुम्राह हो जाओगे। आपने कहा कि ये क्या बात हुई? बिल्कुल सही बात है। जाते इलाही में ग़ौर करने की इन्सान में सलाहियत ही नहीं है। इन्सान का दिमाग़ है महदूद और अल्लाह की ज़ात ला महदूद। लाहमहदूद की समाई महदूद में कैसे हो सकती है? हां, अल्लाह की ख़िलक़त से आप को उसके सिफ़ात का अन्दाज़ा और एक छोटी सी झलक मिल सकती है। मिसाल के तौर पर कल सुबह को जब कराची में सूरज निकले और सूरज निकलने के बाद कोई आदमी कहे कि मैं सूरज को नहीं मानता कि निकला है। तो आप क्या कहियेगा? आप कहियेगा कि भाई, अगर सूरज न निकला होता तो बग़ैर बिजली के रोशनी कैसे हो रही होती, धूप कैसे होती और ये सारी चीज़ें दिखायी कैसे दे रही होतीं। इन सब चीज़ों का दिखाई देना इस बात की दलील है कि कोई रोशनी का मरकज़ है जो चमक रहा है लेकिन उसने कहा कि मैं तो यूँ नहीं मानूँगा। मैं

तो सूरज को देखूँगा तो ही मानूँगा। तो आप ने भी कहा कि फिर देखो। लेहाज़ा उस बेचारे ने सूरज को देखना शुरू किया। अब सूरज तो दिखाई देता ही नहीं लेकिन उसको भी ज़िद है कि जब तक सूरज मुझे दिखाई नहीं देगा, उस वक़्त तक मैं अपनी नज़र हटाऊँगा नहीं और सूरज को भी ज़िद कि मैं दिखाई नहीं दूँगा। नज़रें लडाते-लडाते दो तीन घंटे तक जब वो सूरज को देखने की कोशिश कर चुका तो सूरज तो दिखायी न दिया लेकिन नतीजा क्या हुआ? सूरज को देखने की ज़िद में उसकी आंखों में जो रोशनी थी, वो भी ग़ायब हो गई। तो जब एक माददी नूर को देखने के बाद इन्सान की बसारत ज़ायल हो जाती है तो खालिक को बराहे रास्त (Direct) देखने के बाद बसीरत कैसे न ज़ायल हो जायेगी, अभी बात खत्म थोड़ी न हुई है। बाज़ इन्सान भी बहुत ज़हीन होते हैं। एक इन्सान ने कहा कि मैं देखूँगा सूरज को, मैंने पूछा कि आप सूरज को कैसे देखेंगे? उसने जवाब दिया कि कोई Problem नहीं होगी। मैं (Market) जाता हूँ और बाज़ार से एक किस्म (Type) की ऐनक (Glasses) लिये आता हूँ। उसको लगाने के बाद मैं जितनी देर तक चाहूँगा, सूरज को देखता रहूँगा। मैं कहूँगा कि आप होशियार हैं तो मैं भी होशियार हूँ। बस जैसे आप ये कहते हैं कि मैं एक खास ऐनक के वसीले से सूरज को देखूँगा, वैसे ही मैं भी कहूँगा कि अल्लाह को देखना है तो वसीले से देखिये। बराहेरास्त देखने की कोशिश न कीजिये। बस फर्क यह है कि सूरज का नूर माददी है इस लिए सूरज को देखने के लिये माददी ऐनक की ज़रूरत है और अल्लाह की मारेफ़त हासिल करने के लिए आपको कुछ रुहानी हस्तियों का वसीला बनाना पड़ेगा। इन हस्तियों के इल्म को देख कर अल्लाह के इल्म की हल्की सी झलक नज़र आयेगी। इनके रहम को देखकर अल्लाह के रहम का हल्का सा

अन्दाज़ा होगा। और इनके इन्साफ को देख कर अल्लाह की अदालत का अन्दाज़ा होगा।

“इस दुनिया में हर इन्सान अपना रोल अदा कर रहा है”

बाज़ लोग ऐतराज़ करते हैं कि अगर अल्लाह है तो दुनिया में इतनी नाइन्साफियां (Injustices) क्यों हो रही हैं? ये नाइन्साफी नहीं हैं कि कोई बेचारा फकीर है तो कोई अमीर है। कोई बीमार है तो कोई सेहतमन्द है। कोई अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है तो कोई फाके कर रहा है। अगर आदिल अल्लाह मौजूद होता तो ये तफ़रीक़ात (Differentiation) न होतीं।

मैं अर्ज़ करता हूँ कि अगर कुरआन की आयतें आपके सामने होतीं तो आपके दिल में ये ख़्याल पैदा न होता। कुरआने मजीद ने कहा है कि ये दुनिया क्या है? ये दुनिया तो एक स्टेज (Stage) है और एक स्टेज के ऊपर ड्रामा (Drama) हो रहा है। हर इन्सान का अपना एक कैरेक्टर (Character) है। जिसको इस दुनिया में बादशाह बनाया गया है वो वाक़यी बादशाह नहीं है बल्कि बादशाह का रोल (Role) अदा कर रहा है। जिसे वज़ीर बनाया गया है उसे ये ग़लतफहमी न हो कि वाक़ई वो वज़ीर है वो तो वज़ीर का रोल अदा कर रहा है। जिसे ताजिर (Businessman) बनाया गया है वो ताजिर का रोल अदा कर रहा है। जिसे बीमार बनाया गया है वो बीमार का रोल अदा कर रहा है। अब कितनी ज़बरदस्त हिमाक़्त (बेवकूफी) की बात होगी कि वो इन्सान जो थोड़ी देर के लिए स्टेज के ऊपर बादशाह का रोल अदा कर रहा हो, वो वाक़ई अपने को बादशाह समझने लगे। इसी लिये मैं आप के सामने अर्ज़ करना चाहता हूँ कि अगर ज़िन्दगी के स्टेज पर आप देखेंगे तो कोई बादशाह दिखायी देगा, कोई वज़ीर दिखायी देगा, कोई अमीर दिखाई देगा

और कोई ग़रीब दिखाई देगा लेकिन जैसे ही ड्रामा ख़त्म होता है तो सब एक लिबास में आ जाते हैं। उसी तरह जो कैरेक्टर अपनी ज़िन्दगी का रोल अदा कर चुकता है और कब्र की मंजिल में जाता है तो सबका एक लिबास हो जाता है। सब एक लिबास (कफ़न) में अल्लाह की बारगाह में आ जाते हैं। अब जज़ा (Reward) देने की बात आई तो यह नहीं होगा कि बादशाह को पहला इनाम दिया जायेगा। अब ये देखा जायेगा कि जिसके जिम्मे जो कैरेक्टर दिया गया था, जो रोल दिया गया था, उसने वो रोल कैसे अदा किया। एक बादशाह ने जो फ़रायज़ (Duties) अंजाम दिये कि जो इसको अंजाम देना चाहिए थे। कहीं “फ़िरऔन” तो नहीं बन गया था? एक ग़रीब ने ग़ुरबत की वजह से मायूस होकर दीन के खिलाफ़ जेहाद तो नहीं छेड़ दिया। हर इन्सान इस दुनिया में एक रोल अदा कर रहा है और इनाम हमको आख़िरत की ज़िन्दगी में मिलेगा।

“मथुरा की तरह यहाँ भी अज़ादारी हो”

हिन्दुस्तान में एक शहर है जिसका नाम है ‘मथुरा’। मथुरा में सिर्फ़ चन्द शियों के घर हैं मगर वहाँ भी मजलिसें होती हैं, जुलूस उठता है और वो मथुरा शहर जिसे श्री कृष्ण जी की पैदाइश का शहर बताया जाता है, जहाँ सिर्फ़ चन्द शियों के घर हैं, बाकी बड़ी तादाद में हमारे सुन्नी भाई हैं जो ज्यादातर कुरैशी बिरादरी के हैं, लेकिन जब मोहर्रम का जुलूस उठता है तो हजारों लोगों का मजमा होता है और हिन्दू हज़रात भी वहाँ सबीलें लगाते हैं।

हज़ारों लोगों के जुलूस में सिर्फ़ चन्द शिया होते हैं, बाकी सब सुन्नी हज़रात। काश यही सूरते हाल यहाँ पाकिस्तान में भी होती और इन्शाल्लाह होगी। इन्शाल्लाह यहाँ भी सब मिलकर करबला का ज़िक्र करेंगे।

मुख्य समाचार

हज के हवाले से ईरान व सऊदी अरब की बातचीत कामयाब 85 हजार ईरानी इस साल फ़रीज़ए हज अदा कर सकेंगे

अहलेबैत न्यूज़ एजेन्सी अबना के मुताबिक़ ईरानी मोहकमए हज और ज़ियारात ने बयान जारी करते हुए कहा है कि सऊदी हुक्काम ने इस्लामी जमहूरिय-ए-ईरान की तमाम शर्तें मान ली हैं। बयानिया में कहा गया है कि आयतुल्लाह ख़ामेनई के फ़रमूदात पर अमल करते हुए इस्लामी जमहूरिय-ए-ईरान के काबिले एहतेराम हुक्काम की कोशिशों की बदौलत इस साल इस्लामी जमहूरिया ईरान के 85 हजार से ज़ायद हुज्जाजे केराम फ़रीज़ए हज अदा कर सकेंगे। ईरान और सऊदी अरब के दरमियान बात-चीत के बाद इत्तेफ़ाक़ राए से तय पा गया है कि ईरानी बाशिन्दे रवां साल सितम्बर में शुरू होने वाले हज में शिरकत करेंगे। ख़याल रहे कि ईरान और सऊदी अरब के दरमियान कशीदगी की वजह से गुज़िश्ता साल 2016 ई0 में ईरानी शहरी हज अदा करने से महरूम रहे थे। इस्लामी जमहूरिय-ए-ईरान के मोहकमए हज व ज़ियारात और सऊदी हुक्काम के दरमियान मुज़ाकेरात कामयाब हो गए हैं। सऊदी हुक्काम ने ईरानी हुज्जाज को तमाम तर वसायल फ़राहम करने का अहद कर लिया है। वाज़ेह रहे कि सऊदी अरब में मारुफ़ शिया आलिम शेख़ निम्स् को फांसी दिए जाने के बाद ईरान और सऊदी अरब के सिफ़ारती ताल्लुकात मुनक़ता हो गए थे।

शाम में हरमे सकीना(अ0) के करीब बम धमाकों में 40 अफ़राद शहीद, 120 ज़ख्मी

अहलेबैत न्यूज़ एजेन्सी अबना के मुताबिक़ शाम के दारुल हुकुमत दमिश्क के जुनूबी इलाके में हुए दो बम धमाकों में कई अफ़राद शहीद और ज़ख्मी हो गए हैं। यह दो बम धमाके हरमे हज़रत सकीना(अ0) के करीब बाबे मुसल्ला के इलाके बाब अल सगीर पर जायरीन के दरमियान किए गए। इत्तेलाआत के मुताबिक़ धमाका ख़ेज़ मवाद बसों के अन्दर रखा हुआ था और हरमे मुतहहर के करीब बाब अल सगीर पर बस पहुंचते ही फट गया जिसकी वजस से हरमे मुतहहर सकीना(अ0) के दरजनों ज़यरीन शहीद हो गए। ह्यूमन राट्स वाच ने इन धमाकों में शहीद होने वाले अफ़राद की तादाद 40 बताई है जबकि 120 के ज़ख्मी होने की इत्तेला है। बाज़ ज़ख्मियों की हालत तशवीश नाक बताई जा रही है। इराक़ की वज़ारते ख़रजा ने इन धमाकों की शदीद मज़म्मत की है।

दमिश्क की अदालत पर आत्मघाती हमला, 30 अफ़राद शहीद 45 ज़ख्मी

अहलेबैत न्यूज़ एजेन्सी अबना के मुताबिक़ एक खुद कश हमला करने वाले ने दमिश्क के इलाके हमीदिया में अदालत की इमारत के अन्दर बम धमाका कर दिया जिसकी वजह से कई अफ़राद शहीद और ज़ख्मी हुए हैं। शाम के अल अख़बारिया टीवी चैनल ने एलान किया है कि खुद कश धमाका ख़ेज़ मवाद के साथ अदालत की इमारत में घुस गया और धमाके की वजह से दसियों अफ़राद शहीद और ज़ख्मी हुए हैं। अटारनी जनरल की रिपोर्ट के मुताबिक़ इस हमले में 30 अफ़राद शहीद और 45 ज़ख्मी हुए हैं।

अमरीका और इस्राईल, ईरान पर हमला करने की ताकत नहीं रखते: हसन नस्रुल्लाह

अहलेबैत न्यूज़ एजेन्सी अबना के मुताबिक हिज़बुल्लाह के सरबराह सय्यद हसन नस्रुल्लाह ने हमारे नुमाइन्दे से एक खुसूसी इन्टरव्यू में कहा कि अमरीका और इस्राईल में ईरान पर हमला करने की हिम्मत व ताकत नहीं है और ईरान की दिफ़ाई तवानाइयों को ख़तरा बनाकर पेश करने की मुहिम ईरान की क़यादत, हुकूमत और अवाम पर दबाव डालने के लिए एक नफ़सियाती जंग है। उन्होंने कहा कि अमरीका की मौजूदा सूरतेहाल और उसकी फ़ौजी तवानाइयां या फिर इस्राईल की फ़ौजी तवानाई ऐसी नहीं है कि वह ईरान के खिलाफ़ जंग छेड़ सके इस लिए ईरान के खिलाफ़ बयानात, सिर्फ़ नफ़सियाती जंग का हिस्सा हैं। सय्यद हसन नस्रुल्लाह ने कहा कि यह नफ़सियाती जंग सिर्फ़ इस लिए है कि अमरीका की फ़ौजी ताकत मोहमल हो रही है और ईरान की दिफ़ाई कुव्वत में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा हो रहा है। उन्होंने लबनान पर इस्त्राईल की मुमकेना ज़ारहियत के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा कि ग़ासिब सैहूनी हुकूमत के क़याम के बाद से ही लबनान को हमेशा इस्त्राईल की तरफ़ से ज़ारहियत का ख़तरा रहा है और वह हर महीने लबनान पर हमले की धमकियां दिया करता है। उन्होंने ख़बरदार किया कि इस्त्राईल ने अगर कोई जंग मुसल्लत की तो इस बार इस्त्राईल के मुक़ाबले में लबनानियों को दो हजार छः की कामयाबी के मुक़ाबले में कहीं ज़ियादा बड़ी कामयाबी नसीब होगी। हिज़बुल्लाह के सरबराह ने कहा कि हम ने गुज़िश्ता जंग में रीड लाईनों का ख़याल रखा था लेकिन अब हम किसी भी रेड लाइन की परवाह नहीं करेंगे और हम हत्ता हीफ़ा में आमूनयाक के डिपो और डेमूना के एटमी रिएक्टर को भी निशाना बनाएंगे और इस्त्राईल को उसकी ज़ारेहियत का मज़ा चखाएंगे। सय्यद हसन नस्रुल्लाह ने शाम के बोहरान का ज़िक्र करते हुए कहा कि शाम में जंग सिर्फ़ दहशत गर्द गिरोहों के खिलाफ़ नहीं है बल्कि अमरीका की सर कर्दगी में बहुत से मगरिबी और अरब मुल्कों के साथ जंग हो रही है। उन्होंने यमन पर सऊदी अरब के वहशियाना हमलों के तक़रीबन दो साल पूरे होने की जानिब इशारह करते हुए कहा कि यमन पर वहशियाना ज़ारेहियत में अमरीका, इस्त्राईल और इलाक़े के बाज़ अरब ममालिक शरीक हैं।

(बक़िया पेज नं० 11 का.....)

तो सबसे पहले अहदे वफ़ादारी करने वाले और जब इस्लाम की हिफ़ज़त का मसअला दर पेश था फिर तलवारों के हिसार में बिस्तरे रसूल^{स०अ०} पर लेटने वाले और फिर हर सख़्त मौक़े पर सच्चाई के लिये जेहाद करने वाले मेरे बाप अली बिन अबी तालिब^{अ०स०} थे। यह आम कायदा है कि बच्चे जब अपने बुजुर्गों के हालात सुनते हैं तो उनमें बचपन ही से वलवला पैदा होता है कि हमें भी कोई मौक़ा ऐसे कारनामे पेश करने का मिल जाये। इसलिये आम फ़ितरत के तकाज़ों और ज़ाहरी असबाब के लिहाज़ से यह कहना बिल्कुल सही है कि इमाम हुसैन^{अ०स०} के लिये अलावा मन्सबी ज़िम्मेदारी के ख़ानदानी रिवायात और बलन्द फ़ितरत का तकाज़ा यही था कि बचपन से मुन्तज़िर और मुप्ताक़ रहें (षौक़) कि सच्चाई की ख़िदमत, ग़रीबों की दस्तगीरी ओर मज़लूमों से हमदर्दी का कोई मौक़ा पेश आये और आप भी हक़ की हिमायत में अपने फ़रीज़े को अन्जाम देकर अपनी ख़ानदानी रिवायात को ज़िन्दा और बरक़रार रखें।